आनन्द है। उन्होंने स्पष्ट लिखा है। कोई भी वस्तु सुन्दर नहीं हो सकती यदि वह किसी को भी आनन्द प्रदान नहीं कर सकती। सौन्दर्य आनन्द का सदयोग है। आनन्द का ही मूर्त रूप सौन्दर्य है। नीतिशास्त्र मानव की बुराइयों को हटाकर अच्छाइयों की ओर ले जाता है और सौन्दर्यशास्त्र केवल आनन्द की ओर।

उन्होंने सौन्दर्य के तीन स्तरों का उल्लेख किया है - भौतिक मूल्य, रूपात्मक मूल्य एवं साहचर्यपरक मूल्य। इन तीनों अवधारणाओं के संयोग से सौन्दर्य मूल्य की अवधारणा का निर्माण होता है। प्रत्येक सौन्दर्य का एक मूर्त आधार होता है जो भौतिक पदार्थ है। इस भौतिक पदार्थ का निर्माण विविध रसायनिक तत्वों से होता है। ललितकलाओं के भी अपनी मूर्त आधार अथवा भौतिक उपकरण होते हैं जैसे - प्रस्तर, धातु, द्रव्य, नाद तथा भाषा। ताजमहल के सौन्दर्य में संगमरमर, अजन्ता के चित्रों में पहाड़ियों के धातुज रंगों तथा नटराज की मूर्ति में वज्रधातु आदि भौतिक तत्वों की उतनी ही मूल्यवत्ता है जितनी कलात्मक गुणों की। इस कारण सौन्दर्य मूल्य के तत्त्व-विश्लेषण में भौतिक मूल्य को नहीं नकारा जा सकता। संतायना के अनुसार कला सौन्दर्य का दूसरा स्तर रूपात्मक है जो सौन्दर्य का वास्तविक स्तर है। सौन्दर्य की रूप के अतिरिक्त कोई सत्ता नहीं है। रूप कला का आवश्यक तत्त्व है। मानवीय संवेदनाओं के अभाव में रूप का निर्माण निष्प्राण रहता है। भौतिक मूल्यों तथा रूपात्मक मूल्यों से

Scanned with CamScanner

दर्शक तथा कलाकार एक साहचर्य स्थापित करता है तभी कलात्मकता को तात्त्विक दृष्टि से अस्वीकार भी किया गया है क्योंकि सौन्दर्य एक अखण्ड तत्व या अखण्ड चेतना है। माध्यम, आकार तथा विषय तीनों के अभिन्न सद्भाव या पूर्ण तादात्मय का ही नाम सौन्दर्य है। यह सत्य है कि आस्वादन की प्रक्रिया समग्रता में निहित है तथापि विश्लेषण एवं विवेचन की प्रक्रिया हेतु वर्गीकरण व विभाजन आदि आवश्यक है। इसके अभाव में सौन्दर्य - मूल्य - मीमांसा की प्रक्रिया पूर्ण नहीं हो सकती। इस कारण संतायना का यह विभाजन वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत सिद्ध होता है। ये सौन्दर्यशास्त्र का विषय सौन्दर्य चिन्तन मानते हैं क्योंकि सौन्दर्यात्मक निर्णयों की व्याख्या हेतु किसी प्रकार की तत्त्व - मीमांसीय व्याख्या आवश्यक नहीं मानते। इनकी 'द सेंस ऑफ ब्यूटी' के अतिरिक्त 'द लाइफ ऑफ रीजन', 'स्केप्टिसिज्म एण्ड ऐनिमल फेथ', तथा 'रेल्म ऑफ बीइंग' प्रमुख है। संतायना मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का समर्थन करते थे। इनका दृष्टिकोण प्राकृतिक था जिसमें सौन्दर्यानुभूति को एक प्राकृतिक अनुभूति के रूप में स्वीकार करते हुए उसके विविध पक्षों एवं तत्वों को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाता है।

— x —

Scanned with CamScanner